न्यूज़ टुडे

कैबिनेट ने "प्रधान मंत्री धन-धान्य कृषि योजना (PMDDKY)" को मंजूरी दी

यह योजना **नीति आयोग के आकांक्षी जिला कार्यक्रम (ADP) से प्रेरित** है। साथ ही, यह **विशेष रूप से कृषि और संबद्ध क्षेत्रकों पर केंद्रित** अपनी तरह का पहला कार्यक्रम भी है।

- **आकांक्षी जिला कार्यक्रम (ADP) को 2018** में शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य देश के **112 सबसे पिछड़े जिलों में तेजी से और प्रभावी ढंग से बदलाव** लाना है।

इस योजना की मुख्य विशेषताओं पर एक नजर

- **अवधि:** 6 वर्ष (2025-26 से प्रारंभ)।
- **कवरेज:** 100 जिलों को लक्षित किया गया है।
- **फोकस क्षेत्रक:** इसे **विशेष रूप से कम प्रदर्शन करने वाले जिलों में कृषि और संबद्ध क्षेत्रकों में सुधार लाने** के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- **इसे लागू करने संबंधी रणनीति:**
  - **समन्वय:** योजना का क्रियान्वयन **11 विभागों की 36 मौजूदा योजनाओं, राज्यों की अन्य योजनाओं और निजी क्षेत्र की स्थानीय भागीदारी** में किया जाएगा।
  - **जिलों का चयन:** यह **निम्न उत्पादकता, कम फसल सघनता और कम ऋण वितरण** के आधार पर किया जाएगा।
  - इसके तहत **प्रत्येक राज्य/ केंद्र शासित प्रदेश में जिलों की संख्या निवल फसल क्षेत्र और परिचालन जोत के हिस्से** पर आधारित होगी।
    - हालांकि, प्रत्येक राज्य से **कम-से-कम 1 जिले** का चयन किया जाएगा।

गवर्नेंस और निगरानी

- इसके तहत **प्रभावी योजना निर्माण, कार्यान्वयन और निगरानी के लिए जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर समितियां** गठित की जाएंगी।
- **प्रत्येक जिले में जिला धन-धान्य समिति** द्वारा विकसित एक **समर्पित योजना** होगी, जिसमें **प्रगतिशील किसान** शामिल होंगे।
  - **जिला योजनाएं निम्नलिखित राष्ट्रीय लक्ष्यों के अनुरूप होंगी:**
    - फसल विविधीकरण, जल एवं मृदा संरक्षण, कृषि में आत्मनिर्भरता तथा
    - प्राकृतिक एवं जैविक खेती का विस्तार करना।
- **निगरानी:**
  - प्रत्येक धन-धान्य जिले में **योजना की प्रगति की निगरानी 117 प्रमुख प्रदर्शन संकेतकों** के आधार पर की जाएगी।
  - **नीति आयोग** जिला योजनाओं की समीक्षा और मार्गदर्शन करेगा।

PMDDKY के उद्देश्य

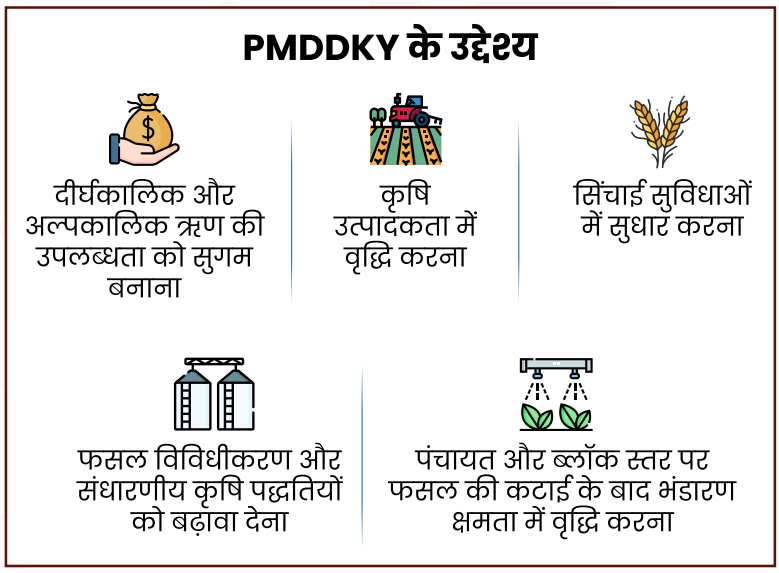

साउथैम्पटन विश्वविद्यालय नए UGC विनियमों के तहत भारत में अपना कैंपस शुरू करने वाला पहला वैश्विक विश्वविद्यालय बना

इसने अपना कैंपस **गुरुग्राम** में खोला है। यह कैंपस **विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) के "भारत में विदेशी उच्चतर शिक्षण संस्थानों के कैंपस की स्थापना और संचालन" विनियम, 2023** के तहत स्थापित किया गया है।

- इससे पहले, **ऑस्ट्रेलिया की डीकिन यूनिवर्सिटी और वोलोंगोंग यूनिवर्सिटी** ने GIFT सिटी में अपने कैंपस खोले थे।
  - इन विश्वविद्यालयों को **अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण (IFSCA)** से मंजूरी मिली थी।

UGC के "भारत में विदेशी उच्चतर शिक्षण संस्थानों के कैंपस की स्थापना और संचालन" विनियम 2023:

- **उद्देश्य:** राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के तहत विदेशी उच्चतर शिक्षण संस्थानों (FHEIs) के भारत में प्रवेश को सुगम बनाना।
- **पात्रता:** वे संस्थान जो **विश्व के शीर्ष 500 विश्वविद्यालयों में समग्र या विषय-वार रैंकिंग में शामिल** हों, या किसी विशेष क्षेत्र में असाधारण विशेषज्ञता रखते हों।
- **ऑनलाइन या डिस्टेंस लर्निंग की अनुमति नहीं:** हालांकि, कार्यक्रम की कुल आवश्यकता के अधिकतम 10% तक ऑनलाइन माध्यम से पढ़ाये जाने की अनुमति है।

भारत में विदेशी कैंपस के लाभ	भारत में विदेशी कैंपस से जुड़ी चुनौतियां
वैश्विक डिग्रियों तक स्थानीय पहुंच: यह ब्रेन ड्रेन (प्रतिभा पलायन) को रोकने में मदद करेगा।	**सांस्कृतिक और संचालन से जुड़ी भिन्नताएं:** भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य के अनुरूप ढलने के लिए स्थानीय मूल्यों की गहरी समझ जरूरी है।
सहयोगात्मक अनुसंधान और नवाचार: भारतीय संस्थानों के साथ सहयोग करने से शोध की क्षमताओं में सुधार हो सकता है।	**वित्तीय व्यवहार्यता:** लागत को इस तरह संतुलित करना कि छात्रों को कम फीस पर बेहतर शिक्षा मिल सके।
कौशल विकास और रोजगार क्षमता में योगदान: वैश्विक उद्योग मानकों के अनुरूप प्रोग्राम उपलब्ध कराकर योगदान करेंगे।	**कानूनी अनिश्चितताएं:** भूमि अधिग्रहण, श्रम कानूनों और बौद्धिक संपदा अधिकारों से जुड़ी जटिलताएं।

यूनाइटेड किंगडम में माइटोकॉन्ड्रियल डोनेशन ट्रीटमेंट से पहले बच्चों का सफलतापूर्वक जन्म हुआ

एक नए क्लीनिकल ट्रायल में ऐसे **आठ बच्चों का सफलतापूर्वक जन्म हुआ,** जो अपनी माताओं से **माइटोकॉन्ड्रियल बीमारियां** विरासत में ग्रहण करने के **उच्च जोखिम** में थे। यह सफलता **माइटोकॉन्ड्रियल डोनेशन या माइटोकॉन्ड्रियल रिप्लेसमेंट थेरेपी** (MRT) के ज़रिए मिली है।

माइटोकॉन्ड्रियल रोग क्या है?

- **माइटोकॉन्ड्रिया:** ये हमारे शरीर की **लगभग प्रत्येक कोशिका में मौजूद** होते हैं और **90% से अधिक ऊर्जा पैदा** करते हैं। इसलिए इन्हें **कोशिका का "पावर प्लांट"** कहा जाता है।
- **माइटोकॉन्ड्रियल DNA:** माइटोकॉन्ड्रिया का **अपना DNA** होता है, जो न्यूक्लियर DNA से अलग होता है। यह **शरीर की ऊर्जा उत्पन्न करने में मदद** करता है, लेकिन **शारीरिक बनावट** पर इसका कोई असर नहीं पड़ता।
- **माइटोकॉन्ड्रियल रोग:** जब माइटोकॉन्ड्रिया **ठीक से काम नहीं करते, तो कोशिकाओं में ऊर्जा की कमी** हो जाती है जिससे वे **मरने** लगती हैं। जब अत्यधिक मात्रा में कोशिकाएं मर जाती हैं, तो **शरीर की अंग प्रणाली विफल** हो जाती हैं, जिससे व्यक्ति की जान जा सकती है।
  - माइटोकॉन्ड्रियल रोग **केवल माता से बच्चे को विरासत में मिलते** हैं।

माइटोकॉन्ड्रियल डोनेशन या माइटोकॉन्ड्रियल रिप्लेसमेंट थेरेपी (MRT) के बारे में

- **MRT की परिभाषा:** यह **इन-विट्रो फर्टिलाइजेशन** (IVF) का एक नया रूप है। इसमें महिला के **दोषपूर्ण माइटोकॉन्ड्रियल DNA (mt-DNA) को डोनर महिला के स्वस्थ mt-DNA से बदला जाता है।**
- **MRT उपचार में बनने वाले भ्रूण में निम्नलिखित होते हैं:**
  - एक पुरुष और एक महिला (संभावित माता) से **न्यूक्लियर DNA; तथा**
  - एक अन्य महिला (डोनर) का **माइटोकॉन्ड्रियल DNA.**
- चूंकि, पैदा हुए बच्चे में **तीन व्यक्तियों का DNA** होता है, इसलिए इसे **"थ्री-पैरेंट बेबी"** कहा जाता है।
- **तकनीकें:** MRT में अलग-अलग प्रकार की तकनीकें शामिल हैं, जैसे **मैटरनल स्पिंडल्स ट्रांसफर (MST), प्रोन्यूक्लियर ट्रांसफर (PNT) आदि।**

प्रोन्यूक्लियर ट्रांसफर (PNT)	मैटरनल स्पिंडल्स ट्रांसफर (MST)
यह प्रक्रिया **निषेचन के बाद** की जाती है।	यह प्रक्रिया **निषेचन से पहले** की जाती है।
माता-पिता के निषेचित अंडाणु से उनका आनुवंशिक पदार्थ निकालकर डोनर (दानदाता) के स्वस्थ माइटोकॉन्ड्रिया वाले अंडाणु में डाला जाता है।	**माता के अंडाणु** से उसका आनुवंशिक पदार्थ निकालकर **डोनर के स्वस्थ माइटोकॉन्ड्रिया वाले अंडाणु** में डाला जाता है।
इससे ऐसा भ्रूण बनता है, जिसमें **माता-पिता का DNA और डोनर का स्वस्थ माइटोकॉन्ड्रिया** होता है।	इस **नए अंडाणु को फिर पिता के शुक्राणु से निषेचित** किया जाता है।
इसमें **दोषपूर्ण माइटोकॉन्ड्रिया के 5% से भी कम हिस्से के अंतरित** होने की संभावना रहती है।	यह विधि **अधिक सुरक्षित** मानी जाती है, क्योंकि इसमें **दोषपूर्ण माइटोकॉन्ड्रिया के अंतरित होने का खतरा बहुत कम** होता है।

OECD-FAO ने 'एग्रीकल्चर आउटलुक 2025-2034' जारी किया

यह आउटलुक **राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर कृषि आधारित उत्पादों (मछली सहित) तथा उनके बाजारों के लिए दस साल की संभावनाओं** का व्यापक आकलन प्रदान करता है।

इस आउटलुक के अनुसार वैश्विक बाजार रुझानों (2024) पर एक नजर

- **जैव ईंधन:** इसकी मांग में **प्रतिवर्ष 0.9% की वृद्धि** होने का अनुमान है, जिसका नेतृत्व **भारत, ब्राजील और इंडोनेशिया** कर रहे हैं।
- **कपास:** वैश्विक स्तर पर कपास के उपयोग में वृद्धि हुई है। साथ ही, **भारत चीन को पछाड़कर कपास का शीर्ष उत्पादक बनने की ओर अग्रसर है।**

इस संदर्भ में देखें तो **भारत की कृषि विपणन प्रणाली** यह सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है कि कृषि उपज को उपभोक्ताओं तक कुशलतापूर्वक पहुँचाया जा सके।

भारत में कृषि विपणन

- इसमें उन **सभी गतिविधियों और संगठनों** को शामिल किया जाता है, जो कृषि उपज, कच्चे माल और उनसे निर्मित उत्पादों (जैसे वस्त्रों) को **खेतों से ग्राहकों तक पहुंचाने** का काम करते हैं।

भारत में कृषि बाजारों से संबंधित मुद्दे

- **कमजोर अवसंरचना: केंद्रीय कटाई उपरांत अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान** के अनुसार अपर्याप्त शीत भंडारण और परिवहन के कारण फसल की कटाई के बाद 92,000 करोड़ रुपये का नुकसान होता है।
- **राष्ट्रीय एकीकृत बाजार का अभाव:** कृषि उपज मंडी समितियों (APMCs) का बाजार बिखरा हुआ है।
  - **कृषि विपणन राज्य सूची** का विषय है। साथ ही, इसे संबंधित राज्य के APMC **अधिनियमों के तहत स्थापित APMC द्वारा विनियमित** किया जाता है।
- **बाजार तक सीमित पहुंच:** दूरदराज और ग्रामीण क्षेत्रों में **लघु किसानों की बाजार तक पहुंच नहीं** है या वे अपनी उपज एवं उत्पादों के लिए स्थानीय व्यापारियों पर निर्भर हैं, जो उनसे कम कीमत पर खरीदारी करते हैं।

कृषि-विपणन में सुधार के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदम

- **राष्ट्रीय कृषि बाजार (ई-नाम/e-NAM):** यह किसानों को अलग-अलग बाजारों में खरीदारों को ऑनलाइन माध्यम से उपज बेचने में सक्षम बनाता है। इससे मूल्य पारदर्शिता और व्यापक पहुंच सुनिश्चित होती है।
- **10,000 FPOs (किसान उत्पादक संगठन) योजना:** इसका उद्देश्य विशेष रूप से लघु और सीमांत किसानों के लिए बाजार से जुड़ाव को मजबूत करना है।
- **कृषि अवसंरचना कोष:** यह ब्याज अनुदान और वित्तीय सहायता के साथ गोदामों, शीत श्रृंखलाओं एवं सामुदायिक परिसंपत्तियों जैसी फसल कटाई उपरांत अवसंरचना हेतु सहायता प्रदान करती है।
- **कृषि विपणन अवसंरचना (AMI):** इसका उद्देश्य गोदामों/ भंडार गृहों के निर्माण के माध्यम से ग्रामीण भंडारण क्षमता में वृद्धि करना है।

गुजरात की बन्नी घासभूमि साल के अंत तक चीतों के स्थान-परिवर्तन (Translocation) के लिए तैयार है

वन विभाग ने इस क्षेत्र में **शिकार प्रजातियों की संख्या बढ़ा दी है और एक बाड़ा भी स्थापित** किया है।

- इससे पहले, चीतों को **मध्य प्रदेश के कूनो राष्ट्रीय उद्यान से मध्य प्रदेश के गांधी सागर अभयारण्य** में स्थानांतरित किया गया था।
- **चीता बसावट कार्य योजना में सूचीबद्ध अन्य संभावित स्थलों में शामिल हैं: छत्तीसगढ़** में गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान; **मध्य प्रदेश** में डुबरी वन्यजीव अभयारण्य, संजय राष्ट्रीय उद्यान, बगदारा वन्यजीव अभयारण्य, वीरांगना दुर्गावती टाइगर रिजर्व; **राजस्थान** में डेजर्ट राष्ट्रीय उद्यान और शाहगढ़ घास के मैदान; तथा **उत्तर प्रदेश** में कैमूर वन्यजीव अभयारण्य।

बन्नी घासभूमि के बारे में

- **स्थान:** यह **गुजरात के कच्छ** जिले में स्थित है। यह एक **विशिष्ट लवण-सहनशील घासभूमि पारिस्थितिकी-तंत्र है।**
- **विशेषता:** यह **एशिया की सबसे बड़ी उष्णकटिबंधीय घासभूमि** है। इसकी उत्पत्ति **विवर्तनिक गतिविधियों के कारण समुद्र** से हुई है।
- **निवासी:** यहां **मालधारी, रबारी, मुतवा और मेघवाल** जैसे अलग-अलग **पशुचारक समुदाय** निवास करते हैं।

प्रोजेक्ट चीता के बारे में

- **परिचय:** इस प्रोजेक्ट की शुरुआत 2022 में हुई थी। इसके तहत **नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका से अफ्रीकी चीतों को भारत में (कूनो राष्ट्रीय उद्यान में) स्थानांतरित** किया गया है।
  - यह किसी जंगली और बड़े मांसाहारी जीव का **पहला महाद्वीपीय स्थान-परिवर्तन है।**
- **कार्यान्वयन एजेंसी: राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA)।**
- **चीता परियोजना संचालन समिति:** इसका गठन NTCA द्वारा 2023 में प्रोजेक्ट चीता के कार्यान्वयन की देखरेख, मूल्यांकन और सलाह देने के लिए किया गया था।
  - NTCA **पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय** के अंतर्गत एक **वैधानिक** निकाय है। इसका गठन **वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972** के प्रावधानों के अंतर्गत किया गया है। इस अधिनियम को **2006 में संशोधित** किया गया था।

चीते के बारे में

चीता दुनिया का सबसे तेज दौड़ने वाला स्तनपायी है। यह भारत से **विलुप्त (1952 में)** होने वाला एकमात्र बड़ा मांसाहारी प्राणी है

- अन्य बिग कैट्स प्रजातियों जैसे- **शेर, बाघ, तेंदुए और जगुआर** के विपरीत, **चीते दहाड़ते नहीं हैं।**
- चीते की **दो प्रजातियां** मौजूद हैं:
  - **अफ्रीकी चीता:** IUCN स्थिति - **वल्नरेबल।**
  - **एशियाई चीता:** IUCN स्थिति - **क्रिटिकली एंडेंजर्ड।**
- एशियाई चीते केवल **पूर्वी ईरान के शुष्क क्षेत्रों** में ही पाए जाते हैं, जबकि अफ्रीकी चीते **संपूर्ण अफ्रीका** में मिलते हैं।

केंद्रीय जल आयोग (CWC) ने NGT को भारत में हिमनदीय झीलों में जल फैलाव क्षेत्र के बारे में जानकारी दी

CWC की रिपोर्ट में कहा गया है कि **10 हेक्टेयर से बड़ी 100 हिमनद झीलों में से, 34 झीलों में जल फैलाव क्षेत्र बढ़ने की प्रवृत्ति देखी गई है; 20 झीलों में घटने की प्रवृत्ति रही है और 44 झीलों में "कोई परिवर्तन नहीं"** की प्रवृत्ति देखी गई है।

- CWC देश के विविध राज्यों और अंतर्राष्ट्रीय सीमा क्षेत्रों मौजूद **902 हिमनद झीलों और जल निकायों की रिमोट सेंसिंग तकनीक की मदद से निगरानी** करता है।
  - **राष्ट्रीय GLOF जोखिम न्यूनीकरण कार्यक्रम (2021-2026)** के तहत **90 GLOF (हिमनदीय झील के टूटने से उत्पन्न बाढ़) आधारित परियोजना अध्ययन** स्वीकृत किए गए हैं।
- राष्ट्रीय GLOF जोखिम न्यूनीकरण कार्यक्रम **चार राज्यों** में लागू किया जा रहा है। ये राज्य हैं- **अरुणाचल प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम और उत्तराखंड।**

GLOFs (हिमनदीय झील के टूटने से उत्पन्न बाढ़) के बारे में

- **हिमनदीय झीलें:** ये पिघलती हुई हिमनदियों (Glaciers) से एकत्रित होने वाले जल निकाय हैं। हिमनदियों से पिघलने वाली हिम का जल आमतौर पर हिमनदी के आधार पर या उसके पास एकत्र होता है।
- **GLOF:** यह **एक प्रकार की बाढ़** है। हिमनदीय झील के जल को रोक कर रखने वाले प्राकृतिक तटबंधों (जैसे कि हिमोढ़) के टूट जाने से अचानक और बहुत अधिक मात्रा में ढलान की दिशा में जल का प्रवाह होने लगता है।
  - उदाहरण के लिए: अक्टूबर 2023 में **सिक्किम में दक्षिणी ल्होनक झील** के टूटने से GLOF की घटना घटित हुई थी। इसने सिक्किम में **तीस्ता-III बांध को भारी नुकसान** पहुंचाया था।
- **भौगोलिक वितरण:** GLOF की घटनाएं आमतौर पर हिमनद वाले क्षेत्रों में घटित होती हैं, विशेष रूप से उन पहाड़ी इलाकों में जहां महत्वपूर्ण हिमनदीय गतिविधि होती है। **उदाहरण के लिए-** हिमालय, एंडीज और आल्प्स।
- **प्रभाव:** GLOF से निचले इलाकों में भयंकर बाढ़ आ सकती है, अवसंरचना को नुकसान पहुँच सकता है और जनहानि भी हो सकती है।
- **उत्प्रेरक तंत्र :** GLOF का मुख्य कारण हिमनदीय झील के जल को रोक कर रखने वाले हिमोढ़ बांध या हिम बांध का टूटना है।

GLOF के प्रमुख कारण

- **हिमनद का तेजी से आगे बढ़ना (Glacial Surging):** यह किसी हिमनद का तीव्र गति से व काफी कम समय में आगे बढ़ना है, जो उसकी सामान्य धीमी गति के विपरीत है। उदाहरण के लिए- **गिलकी ग्लेशियर (अलास्का)।**
- **मोरेन बाँध का टूटना:** अस्थिर और ढीली मिट्टी-पत्थर से बने बाँध का ध्वस्त हो जाना। उदाहरण के लिए: **दक्षिणी ल्होनक झील, सिक्किम।**
- **भूकंपीय गतिविधियां:** भूकंप के कारण हिमनदों की संरचना अस्थिर हो जाती है।
- **मानवीय गतिविधियां:** अनियोजित विकास, खनन, वनों की कटाई और उत्सर्जन से जल निकासी एवं ढलान बाधित होते हैं।

अन्य सुर्ख़ियां

पैसिफिक रिंग ऑफ फायर

संयुक्त राज्य अमेरिका में अलास्का के नजदीक **7.3 तीव्रता के भूकंप के झटके** महसूस किए गए। यह क्षेत्र अधिक भूकंपों वाले **पैसिफिक 'रिंग ऑफ फायर'** का हिस्सा है।

'पैसिफिक रिंग ऑफ फायर' के बारे में:

- यह **प्रशांत महासागर के किनारों का एक ऐसा क्षेत्र** (बेल्ट) है जो **सक्रिय ज्वालामुखियों और लगातार आने वाले भूकंपों के लिए** जाना जाता है।
  - इस बेल्ट में संयुक्त राज्य अमेरिका (अलास्का), रूस, जापान, फिलीपींस, इंडोनेशिया, पापुआ न्यू गिनी, न्यूजीलैंड सहित **15 से अधिक देश** और **अंटार्कटिका स्थित हैं।**
- दुनिया में लगभग **90% भूकंप** इसी क्षेत्र में आते हैं, और पृथ्वी पर **75% सक्रिय ज्वालामुखी** यहीं स्थित हैं।
- यह क्षेत्र **प्लेट विवर्तनिकी (Plate Tectonics)** की प्रक्रिया के कारण बना है।
- इस क्षेत्र में **दुनिया का सबसे गहरा महासागरीय गर्त 'मारियाना ट्रेंच'** भी मौजूद है।

ग्राउंड पेनेट्रेटिंग रडार (GPR) तकनीक

IIT कानपुर की एक टीम ने **ग्राउंड पेनेट्रेटिंग रडार तकनीक** की मदद से हरियाणा के यमुनानगर जिले में **प्राचीन बौद्ध स्तूपों और जमीन के नीचे दबी हुई संरचनाओं** का पता लगाया है।

ग्राउंड पेनेट्रेटिंग रडार (GPR) तकनीक क्या है?

- यह **हाई-रिज़ॉल्यूशन वाली जियोफिजिकल तकनीक** है। यह **हाई फ्रीक्वेंसी वाली विद्युत-चुंबकीय तरंगों का उपयोग करके भूमिगत संरचनाओं** का पता लगाती है।
- ये तरंगें जमीन के नीचे की अलग-अलग वस्तुओं (जैसे मृदा, शैल, या दबी हुई वस्तुएं) से टकराकर **वापस आती हैं, मुड़ती हैं, या बिखर जाती हैं।** इन वापस आती हुई तरंगों का अध्ययन करके जमीन के नीचे क्या है, इसका पता लगाया जाता है।
- **गहराई की सीमा:** आमतौर पर यह लगभग **10 मीटर** की गहराई तक ही वस्तुओं का पता लगा सकती है।
- **मुख्य उपयोग:**
  - आधार शैल (बेडरॉक), भौम जल स्तर और मृदा परतों की गहराई तथा दबी हुई जल-धाराओं, गुहा और दरारों का पता लगाने में उपयोगी है।

ग्रुप ऑफ फ्रेंड्स (GOF)

भारत ने **"ग्रुप ऑफ फ्रेंड्स (GOF)" की बैठक** में **'संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना सैनिकों' के खिलाफ** किए गए अपराधों में न्याय सुनिश्चित करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई है।

'ग्रुप ऑफ फ्रेंड्स (GOF)' क्या है?

- यह **भारत के नेतृत्व** में गठित एक समूह है।
- इसका मुख्य उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना सैनिकों के खिलाफ होने वाली **सभी हिंसात्मक गतिविधियों के लिए जवाबदेही तय करने में मदद करना** है।
- इसे **2022 में शुरू** किया गया।
- यह समूह **'यूनाइटेड नेशन अलायन्स ऑफ सिविलाइजेशन'** (UNAOC) की एक प्रमुख शक्ति है और उसकी रणनीतिक योजना निर्माण एवं क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

कॉमन सर्विस सेंटर (CSC)

कॉमन सर्विस सेंटर-ई-गवर्नेंस सर्विसेज इंडिया लिमिटेड (CSC SPV) ने डिजिटल इंडिया के 10 साल पूरे होने का उत्सव मनाया।

- इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री ने 10 लाख लोगों को **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का निःशुल्क प्रशिक्षण** देने की घोषणा की। इसमें सभी **ग्रामीण स्तरीय उद्यमियों** (VLEs) को प्राथमिकता दी जाएगी।

कॉमन सर्विस सेंटर (CSC) के बारे में

- **शुरुआत:** 2006 में **केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय** (MeitY) के तहत शुरुआत की गई।
- **विज़न:** डिजिटल सेवाओं को सभी व्यक्तियों तक पहुँचाना और भारत में एक मजबूत ICT-आधारित नेटवर्क तैयार करना।
- **CSC नेटवर्क का विस्तार**
  - 2014 में **83,000 कॉमन सर्विस सेंटर्स** थे। आज पूरे भारत में **5.5 लाख से अधिक कॉमन सर्विस सेंटर्स स्थापित** हो चुके हैं।
  - यह **देश के लगभग 90% गांवों तक पहुँच** चुके हैं।
- **कॉमन सर्विस सेंटर पर उपलब्ध प्रमुख सेवाएं:** आधार नंबर नामांकन और अपडेट, पैन कार्ड के लिए आवेदन, पासपोर्ट के लिए आवेदन, बैंकिंग और बीमा सेवाएं, आदि।
- **गाँव स्तर के उद्यमी (Village Level Entrepreneurs: VLEs):** ये जमीनी स्तर पर डिजिटल सेवाएं पहुंचाने में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

श्रेणी भूकंप (Earthquake Swarms)

आइसलैंड में कई प्रबल 'श्रेणी भूकंप' आने के बाद एक विशाल दरार से लावा का उद्गार हुआ।

'श्रेणी भूकंप' के बारे में

- **परिभाषा:** 'श्रेणी भूकंप' एक ऐसी स्थिति है जिसमें बहुत कम समय के भीतर भूकंप के कई झटके महसूस किए जाते हैं, लेकिन इनमें कोई **मेनशॉक् (सबसे प्रबल)** नहीं होता।
- ये भूकंप कई हफ्तों तक आते-रहते हैं और हजारों की संख्या में भूकंप के झटके महसूस किए जा सकते हैं।
- 'श्रेणी भूकंप' **ज्वालामुखी सक्रिय क्षेत्रों, हाइड्रोथर्मल सिस्टम वाले क्षेत्रों** और अन्य सक्रिय भू-तापीय **क्षेत्रों** में आते हैं।

आइसलैंड भूकंप-प्रवण क्षेत्र क्यों है?

- **मध्य अटलांटिक रिज** पर स्थित होने के कारण यहाँ **दो टेक्टोनिक प्लेटों का मिलन** होता है। **मेंटल प्लूम (Mantle Plume)** की उपस्थिति के कारण भी यह भूकंप प्रवण क्षेत्र है।
- आइसलैंड वह दुर्लभ देश है जहाँ **टेक्टोनिक प्लेट की सीमा** और **मेंटल प्लूम,** दोनों के कारण ज्वालामुखीय सक्रियता देखी जाती है।

कोरोनल मास इजेक्शन (CMEs)

खगोलविदों ने मई 2024 में **लद्दाख के आसमान के ऊपर** दर्ज किए गए दुर्लभ **नॉर्थर्न लाइट्स** के लिए **उत्तरदायी शक्तिशाली कोरोनल मास इजेक्शन के रहस्यों को उजागर** किया है।

- ध्यातव्य है कि **कोरोनल मास इजेक्शन** अपनी यात्रा के दौरान अपने **ऊष्मीय व्यवहार (Thermal Behaviour)** को बदलते हैं।
  - **शुरुआत में ये अधिक ऊष्मा उत्सर्जित** करते हैं, लेकिन बाद में ऐसी अवस्था में पहुँच जाते हैं जहाँ वे **ऊष्मा को अवशोषित करते हैं और इसे रोक कर रखते हैं।**

कोरोनल मास इजेक्शन के बारे में

- ये सूर्य के **कोरोना से प्लाज्मा और चुंबकीय क्षेत्र के बड़े विस्फोट** होते हैं।
- ये **अरबों टन कोरोनल पदार्थ को बाहर उत्सर्जित** कर सकते हैं और इसमें एक **समाहित चुंबकीय क्षेत्र** भी होता है।
- सबसे तेज कोरोनल मास इजेक्शन केवल **15–18 घंटे में पृथ्वी तक पहुँच** सकते हैं, जबकि मंद गति वाले **CME को पृथ्वी तक पहुंचने में कई दिन लग** सकते हैं।
- जब ऐसे सौर विस्फोट पृथ्वी की ओर आते हैं, तो **वे भू-चुंबकीय तूफान (Geomagnetic Storms)** उत्पन्न करते हैं, **जो सैटेलाइट संचालन, संचार प्रणालियों और पावर ग्रिड को बाधित** कर सकते हैं।

पुनर्वास का अधिकार (Right to Rehabilitation)

हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने **'एस्टेट ऑफिसर, हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण बनाम भूस्वामी'** वाद में निर्णय दिया कि **'पुनर्वास का अधिकार मूल अधिकार नहीं है।'**

सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के बारे में

- **अनुच्छेद 21 की सीमा:** भूमि अधिग्रहण मामलों में आजीविका से वंचित होना (Deprivation of Livelihood) **अनुच्छेद 21 के अंतर्गत सुरक्षा पाने का कोई वैध आधार नहीं है।**
- **मुआवजा बनाम पुनर्वास:** उचित मौद्रिक मुआवजा **संविधान द्वारा सुनिश्चित की गई है,** लेकिन कानूनी प्रावधानों के बाहर **पुनर्वास की व्यवस्था करना राज्य के लिए बाध्यकारी नहीं है।**
- **'पुनर्वास के अधिकार' का सीमित दायरा:**
  - **अमरजीत सिंह बनाम पंजाब राज्य** वाद (2010) में निर्णय दिया गया कि **भूमि अधिग्रहण अधिनियम के अंतर्गत पुनर्वास को संवैधानिक अधिकार नहीं** माना गया है।
  - **मध्य प्रदेश राज्य बनाम नर्मदा बचाओ आंदोलन** वाद (2011) में निर्णय दिया गया कि **'राज्य को वैकल्पिक आवास उपलब्ध कराने के लिए बाध्य नहीं** किया जा सकता।'

जनजातीय जीनोम परियोजना

गुजरात राज्य सरकार ने **वंशानुगत बीमारियों की समस्या से निपटने** के लिए **भारत की पहली जनजातीय जीनोम परियोजना** शुरू की है।

'जनजातीय जीनोम अनुक्रमण परियोजना' क्या है?

- **उद्देश्य:** जनजातीय समुदायों में **आनुवंशिक बीमारियों की पहचान** करना और उन्हें **सटीक स्वास्थ्य-देखभाल सेवा** उपलब्ध कराना।
- **परियोजना क्षेत्र:** इस परियोजना के तहत गुजरात के 17 जिलों के **2,000** जनजातीय **व्यक्तियों** के **जीनोम का अनुक्रमण** (सीक्वेंस) किया जाएगा।
- **कार्यान्वयन:** इस परियोजना को **गुजरात जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान केंद्र (GBRC)** लागू कर रहा है।
- **मुख्य ध्यान:** इस परियोजना के तहत **सिकल सेल एनीमिया, थैलेसीमिया** जैसी **आनुवंशिक बीमारियों;** और कुछ प्रकार के **वंशानुगत कैंसर** का शीघ्र पता लगाने और लक्षित उपचार प्रदान करने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

सुर्ख़ियों में रहे स्थल

सीरिया (राजधानी: दमिश्क)

सीरिया के स्वेदा (Sweida) में सुन्नी **बेदुइन कबीलाई लड़ाकों** और **द्रूज़ मिलिशिया** के बीच हिंसा भड़क उठी है।

- **भौगोलिक अवस्थिति**
  - **अवस्थिति:** यह मध्य पूर्व में स्थित है और **लिवैंट (Levant) क्षेत्र** का हिस्सा है।
  - **सीमावर्ती देश:** इराक, इजराइल, जॉर्डन, लेबनान और तुर्किए।
  - **सीमावर्ती समुद्र:** भूमध्य सागर।
- **भौगोलिक विशेषताएँ**
  - **महत्त्वपूर्ण नदी:** यूफ्रेट्स नदी।
  - इसके क्षेत्र में **गोलान हाइट्स** का वह हिस्सा शामिल है, जिस पर 1967 से इजराइल का कब्जा है।